Planning by Direction

आदेशात्मक योजना

समाजवादी केन्द्रीय योजना आदेशात्मक योजना होती है जिसमें राज्य प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन एवं वितरण की क्रिया को नियंत्रण करता है। ऐसी प्रत्यक्ष योजना आवश्यक नहीं भी हो सकती है। आदेशात्मक योजना को सफलतापूर्वक समाजवादी अर्थव्यवस्था में लागू किया जाता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था दो तरह की हो सकती है

(1) उदारवादी समाजवाद (Liberal Socialism)

(2) सत्तावादी समाजवाद (Authoritarian Socialism)

1. Liberal Socialism

उदारवादी समाजवाद के अन्तर्गत नियोजन समिति वस्तु तथा साधनों का मूल्य एवं वस्तुओं के उत्पादन की मात्रा को निश्चित करती है। टेलर एवं ऑस्कर लॉगे ने उदारवादी समाजवाद को प्रयत्न एवं भूल विधि से स्पष्ट किया है। जिसे चित्र द्वारा दिखाया गया है।

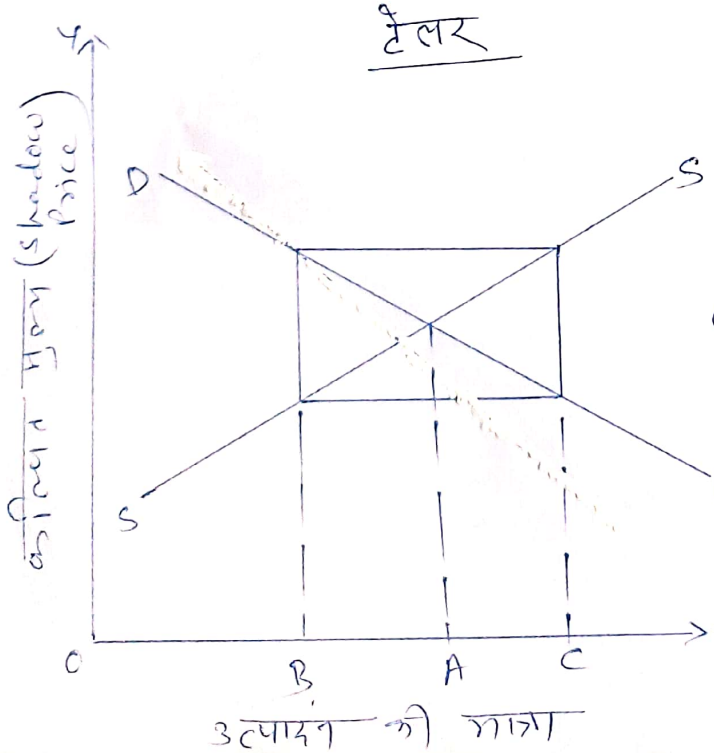

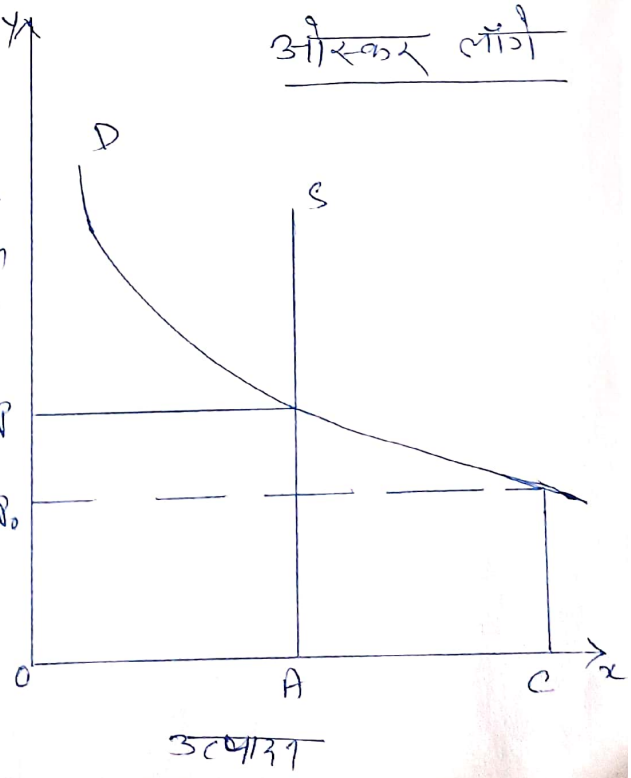

उपर्युक्त (प्रथम) चित्र में टेलर ने दर्शाया है कि उदारवादी समाजवाद में कल्पित मूल्य (Shadow Price) पर OB या OC उत्पादन किया जायेगा और इसी प्रयत्न एवं भूल के द्वारा OA उत्पादन मात्रा की जानकारी प्राप्त कर ली जायेगी। जहाँ समाज में वस्तु की पूर्ति की मात्रा ठीक उस वस्तु की मांग के बराबर हो जायेगी।

द्वितीय चित्र में ऑस्कर लांगे ने भी कल्पित मूल्य पर समाज को OA मात्रा निर्धारित करने की सलाह देते हैं जहाँ वस्तु की पूर्ति उस वस्तु की मांग के बराबर हो जाती है। उदारवादी समाजवाद में आदेशात्मक योजना के द्वारा OA वस्तु उत्पादन करने की आज्ञा दी जायेगी।

2. सत्तावादी समाजवाद (Authoritarian Socialism)

सत्तावादी समाजवाद में निरंकुशता तथा आदेश का प्रयोग किया जाता है। केन्द्रीय नियोजन आयोग द्वारा देश के सभी वस्तुओं के उत्पादन की मात्रा निर्धारित की जाती है तथा वस्तु उत्पाद गुणांक निर्धारित किये जाते है। जिसे निम्न चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है—

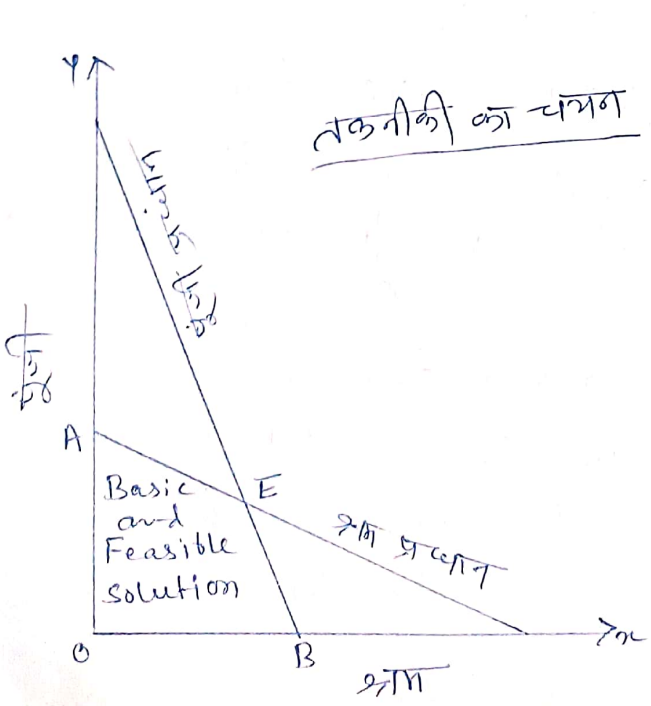

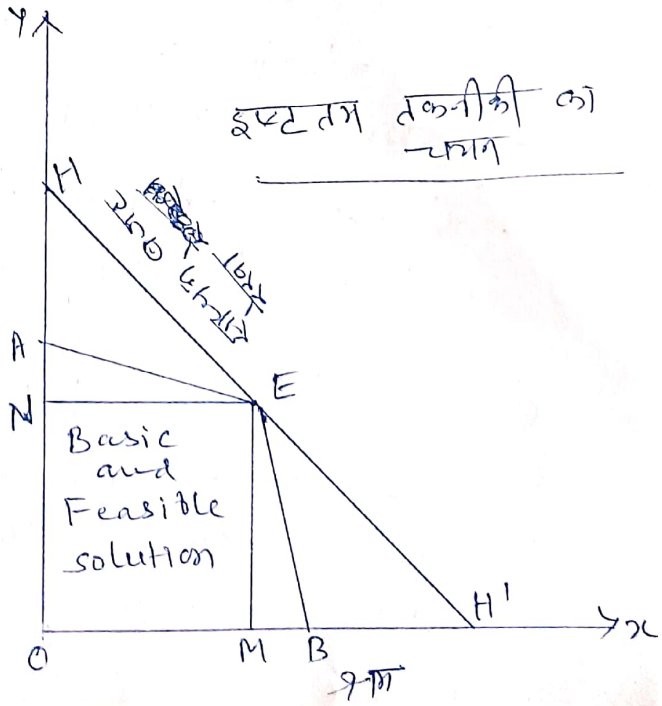

☒ केन्द्रीय नियोजन समिति द्वारा यह निर्णय लिया जाता है कि श्रम प्रधान तकनीकी का चयन करें या तकनीकी के चयन समस्या का इष्टतम हल निकालने का प्रयास किया जाये।
नोट:- (कृपया चित्र से पहले इस पाराग्राफ को लिखा जाय)

उपर्युक्त चित्र 1 में श्रम प्रधान तकनीकी तथा पूंजीप्रधान तकनीकी को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें AEB Basic and feasible solution line प्राप्त होता है।
चित्र 2 में E बिन्दु पर तकनीकी चयन का इष्टतम हल प्राप्त किया गया है क्योंकि साधन बजट रेखा HH_1 AEB Basic and feasible solution line AEB को E बिन्दु पर स्पर्श करती है जो इष्टतम हल के शर्त को संतुष्ट करती है। इष्टतम हल के अन्तर्गत OM श्रमिक तथा ON पूंजी को रोजगार प्राप्त होता है।

आदेशात्मक योजना के गुण

① योजना में निरन्तर परिवर्तन नहीं होना

निरंतर परिवर्तन की कठिनाई आदेशात्मक योजना में निरंतर परिवर्तन होता रहा समाप्त हो जाती है। यदि योजना में परिवर्तन होता रहा तो उद्देश्यों तथा लक्ष्यों के प्राप्ति में कठिनाई हो जाती है।

② काम के सम्पादन में बिलम्ब नहीं होना

आदेशात्मक योजना में काम के संपादन में बिलम्ब नहीं होता है। भय एवं दण्ड के डर से काम तुरन्त संपादित हो जाता है।

③ साधनों का समुचित आवंटन होना

आदेशात्मक योजना में साधनों के समुचित आवंटन की संभावना भी बढ़ जाती है। इसमें वस्तुओं का किसी लाभ के दृष्टिकोण से उत्पादन होता है।

अल्पविकसित तथा अर्द्धविकसित राष्ट्रों के लिए उपयुक्त

आदेशात्मक योजना अल्पविकसित एवं अर्द्धविकसित राष्ट्रों के लिए उपयुक्त है क्योंकि ऐसी अर्थव्यवस्थाएं कई तरह के आर्थिक एवं गैर आर्थिक बाधाओं से ग्रसित रहती है।

(5) योजना में साध्यों के बीच पूर्ण सामंजस्य स्थापित होना

आदेशात्मक योजना में साध्यों के बीच पूर्ण समन्वय स्थापित किया जाता है ताकि इष्टतम हल सभी समस्याओं का प्राप्त किया जा सके।

आदेशात्मक योजना के दोष

(1) व्यक्तिगत स्वतंत्रता का लोप -

केन्द्रीय योजना में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का लोप हो जाता है तथा आर्थिक विकास के उद्देश्य को भी सफलता प्राप्त नहीं होती

(2) योजना में प्रयत्न एवं भूल से असफलता का डर

समाजवादी आदेशात्मक योजना भूल तथा असफलता के वातावरण में काम करती है। जब तक सभी आर्थिक क्रियाएँ अनुमानित ढंग से ठीक-ठीक न हो तो आदेशात्मक योजना सफल नहीं हो सकती।

(3) प्रमाणिक आंकड़ों का अभाव

आदेशात्मक योजना उत्पादन के गणित एवं उत्पादकता सम्बन्धी आंकड़ों की कमी के कारण वस्तुओं की विविधता की उत्पादन योजना नहीं तैयार कर सकती। इसलिए आदेशात्मक योजना के अन्तर्गत वस्तुओं का अत्यधिक प्रमाणीकरण होता है।

(4) प्रजातांत्रिक योजना का लोप

आदेशात्मक योजना में शासक वर्ग का नियंत्रण रहता है तथा जनता का इस योजना पर अधिकार नहीं होता।

इसप्रकार आदेशात्मक योजना तथा प्रेरणात्मक योजना दोनों में गुण-दोष होते हैं लेकिन इनके बीच भी होता है। भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है जहाँ कोई भी एक योजना का तरीका अकेले सफल नहीं हो सकता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था में आदेशात्मक योजना प्रयोग में लायी जाती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी उपक्रम तथा सार्वजनिक उपक्रम दोनों होते हैं इसलिए आदेशात्मक योजना सार्वजनिक क्षेत्र के लिए उपयुक्त होता है और निजी क्षेत्र को प्रेरणात्मक योजना से नियंत्रित किया जाता है। अतः भारत जैसे देश के लिए आदेशात्मक योजना एवं प्रेरणात्मक योजना दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं।

Dr Sandhya Rani
Maharaja college

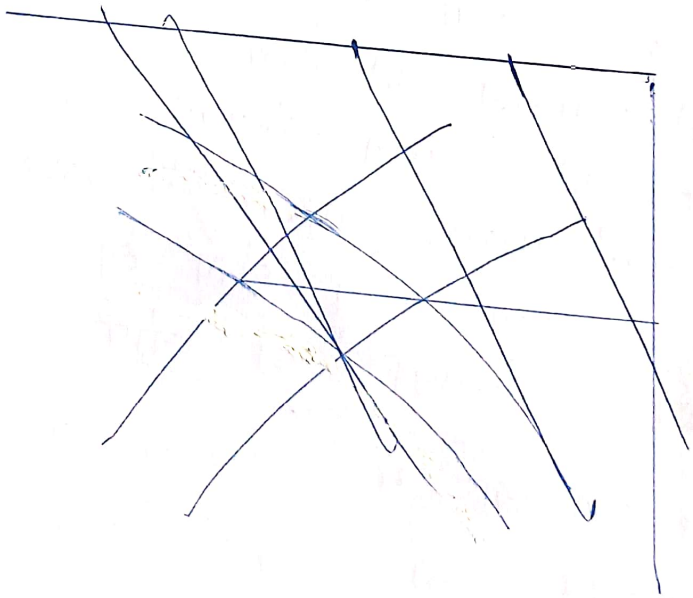

Scanned with OKEN Scanner